केंद्रीय विद्यालय से 5 द्वारका

शिक्षक कभी साधारण नहीं होता, प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।" -आचार्य चाणक्य ...

गुरु ब्रह्मा गुरुर्विष्णु: गुरुदेव महेश्वर:।

गुरु साक्षात्परब्रह्म तस्मैश्री गुरुवे नम:॥

गुरु-शिष्य परंपरा भारत की संस्कृति का एक अहम और पवित्र हिस्सा है, जिसके कई स्वर्णिम उदाहरण हमारे इतिहास में दर्ज हैं।

एक शिक्षक एक चरवाहे को भी सम्राट बना सकता है, इस बात के सत्य होने में भारत वासियों को कोई संदेह नही होना चाहिए।

सारा विश्व आज एक महामारी से जूझ रहा है, इस कठिन समय में भी हमारे शिक्षक साथियों ने अपने विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण का बीड़ा उठाया और वे अपने प्रयासों में सफल हो रहे हैं। बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण और संसाधनों के भी उन्होंने बच्चों की शिक्षा से कोई समझौता नही किया है। वे पारंपरिक शिक्षण की तुलना में कई गुना अधिक मेहनत कर रहे हैं। मैं सभी शिक्षकों को शिक्षक दिवस पर सादर प्रणाम करता हूँ।

गुरु गोविन्द दोउ खड़े काके लागु पांव, बलिहारी गुरु आपने गोविन्द दियो बताय। कबीर दास द्वारा लिखी गई यह पंक्तियां जीवन में गुरु के महत्व को वर्णित करने के लिए काफी हैं।

जीवन में माता-पिता का स्थान कभी कोई नहीं ले सकता क्योंकि वे ही हमें इस रंगीन खूबसूरत दुनिया में लाते हैं। उनका ऋण हम किसी भी रूप में उतार नहीं सकते लेकिन जिस समाज में हमें रहना है, उसके योग्य हमें केवल शिक्षक ही बनाते हैं। यद्यपि परिवार को बच्चे के प्रारंभिक विद्यालय का दर्जा दिया जाता है लेकिन जीने का असली सलीका उसे शिक्षक ही सिखाता है। समाज के शिल्पकार कहे जाने वाले शिक्षकों का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता क्योंकि वह ना सिर्फ आपको सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं बल्कि आपके सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है।

आज अवसर है अपने शिक्षकों के प्रयासों के लिए उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का।

पुनः इस शिक्षक दिवस पर अपने सभी शिक्षकों को सादर प्रणाम।

प्राचार्य

के वी सेक्टर 5 द्वारका